NJESR/ May-2023/Volume-5/Issue-5 E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2023.5.5.75-81

वैश्वीकरण के दौर में मीडिया

किरण देवी,
सहायक प्राध्यापिका (तदर्थ) श्री लाल नाथ हिंदू महाविद्यालय, रोहतक
Email ID- kiranguliahooda@gmail.com

(Received:25April2023/Revised:1May2023/Accepted:15May2023/Published:28May2023)

सारांश:- हम इसे पसंद करते हैं या नहीं, हम इसके लिए तैयार हैं या नहीं, वैश्वीकरण की घटना पहले से कहीं अधिक वास्तविक है। यह कहने की जरूरत नहीं है कि इस गर्म विषय पर पहुंचने के अलग-अलग तरीके हैं, बहस के अलग-अलग स्तर हैं, अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। यह निश्चित है कि वैश्वीकरण जानकारी साझा करने से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है, मीडिया (विशेष रूप से न्यू मीडिया) को अक्सर इसके तीव्र विस्तार के लिए मुख्य वाहन माना जाता है। बिना कुछ कहे, वैश्वीकरण ने मीडिया पर जबरदस्त प्रभाव डाला है और यह लेख मीडिया के दृष्टिकोण से वैश्वीकरण सिद्धांत की आलोचना पर चर्चा करता है। पहले यह वैश्वीकरण के दूरगामी प्रभावों के मूल तर्क के लिए मीडिया के समग्र महत्व पर प्रकाश डालता है और फिर यह तर्क देता है कि वैश्वीकरण के अनैतिहासिक उपचार में नए मीडिया क्षेत्र के महत्वपूर्ण भौतिकवादी विश्लेषण का अभाव है। विस्तार और विस्तार के साथ, वैश्वीकरण के प्रभावों, प्रभावों और प्रभावों की बहस अनिवार्य रूप से दुनिया को केंद्र और परिधि में विभाजित करती है। यह पत्र हाल के दशकों में विकसित आर्थिक, सांस्कृतिक, तकनीकी और नए मीडिया क्षेत्रों की पृष्ठभूमि में मीडिया के ग्रहण किए गए कार्यों को संबोधित करता है। पेपर में वैश्वीकृत दुनिया में मीडिया के सामने आने वाली कुछ चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला गया है। यह सब नवउदारवाद के उदय के संदर्भ में है जो वैश्वीकरण के सिद्धांत के विकास के साथ ओवरलैप होता है। पेपर में वैश्वीकृत दुनिया में मीडिया के सामने आने वाली कुछ चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला गया है। यह सब नवउदारवाद के उदय के संदर्भ में है जो वैश्वीकरण के सिद्धांत के विकास के साथ ओवरलैप होता है। पेपर में वैश्वीकृत दुनिया में मीडिया के सामने आने वाली कुछ चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला गया है। यह सब नवउदारवाद के उदय के संदर्भ में है जो वैश्वीकरण के सिद्धांत के विकास के साथ ओवरलैप होता है।

वैश्वीकरण और मीडिया

आज, "वैश्विक", "कनेक्टिंग" और "कनेक्टिंग", आदि। इको का उद्देश्य। इस सब का यह संकेत सामने आता है कि पूरी दुनिया आज शहर लगती है। इस समय के दौरान, मनुष्यों ने विज्ञान के कारण कई चीजें विकसित की हैं, अपने काम के परिवर्तन को वे कड़ी मेहनत करते हैं कि "उन्होंने सभी देशों की शक्ति दी है। परंपरा, यह विचार मानव इतिहास, दुनिया की दुनिया से "वासुदाहव काकबस्टम" के रूप में है।

"वर्ल्ड ग्लोबल" को 1700 से 1911 तक स्थानांतरित किया जा सकता है, 1914 से 1960 का दूसरा चरण और 1960 से अब तक। समय के साथ, उसके मालिक के मालिक को विभिन्न उद्देश्यों के लिए एक स्थल और सामाजिक राष्ट्र कहा जाता है। लेनदेन पाए जाते हैं। धार्मिक संचलन में व्यापार और राजनीतिक वृद्धि। 15 वीं शताब्दी में चामिन डी ल'यूरोप और "डेलिना मेन" का पता लगाता है, मानव सभ्यता की कहानी में एक महत्वपूर्ण घटना है। गाजा और एब्यूसर ने एशिया में यूरोप से यह समुद्री पहल की है। यह शोध प्रेरित और सीधे है।

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रो. फ्रेड ब्लॉ क बिलकुल सही लगते हैं जब कहते हैं कि "12वीं शताब्दी के अमरीका में भूमण्डलीय समाज के सामने उपस्थित दुविधाओं और समस्याओं को समझना 1944 में छपी पोलानी की पुस्तक 'द ग्रेट ट्रांसफॉर्मेशन: द पोलिटिकल एंड इकोनोमिक्स ओरिजंस ऑफ़ ओवर टाइम' को ध्यान पूर्वक पढ़े बिना संभव नहीं है। पोलानी की कृति बाजार आधारित उदारवाद की अनुपम मीमांसा है। वह बहुप्रचलित धारणा को धाराशायी करती है कि राष्ट्र, समाज और भूमंडलीकरण अर्थव्यवस्था की संरचना स्वनिर्मित बाजारों के जरिए ही संभव है। 1980 विशेषकर शीत युद्ध की समाप्ति और सोवियत संघ के पतन के बाद बाजार, आधारित, 'उदारवाद' 'थैचरवाद', 'रगिनवाद', 'नव उदारवाद' और 'वाशिंगटन' आम राय के विभिन्न नामों से प्रचलित है। वह भूमंडलीय राजनीति पर पूरी तरह हावी है।''1 औद्योगिक क्रांति के तुरंत बाद एडम स्मिथ ने अपनी यह स्थापना रखी कि अगर राज्य अपने को केवल तीन कार्यों (विदेशी शत्रुओं से देश का बचाव, आंतरिक कानून और व्यवस्था बनाए रखना तथा सड़क, अस्पताल, स्कूल आदि सेवाओं को प्रदान करना जिनका उपयोग सब करते हैं, अगर कोई एक व्यक्ति उन्हें प्रदान नहीं कर सकता) तक ही सीमित रखे तथा उन्हीं के लिए करो के जरिए संसाधन जुटाए, तो अर्थव्यवस्था के संचालन और विनियन का शेष कार्य बाजार की शक्तियाँ सुचारू रूप से चलाएँगी। उन्होंने रेखांकित किया कि श्रमिकों, तैयार या कच्चे माल के उत्पादकों, दुकानदारों या फिर उपभोक्ताओं का कोई भी संगठन बना तो बाजार की शक्तियों के कार्य में व्यवधान पड़ेगा। नियमित रूप से "वैश्वीकरण" का अर्थ उत्पादों या चिंताओं के राष्ट्रीय अनुवाद में है। यह काम करने और चैटिंग करने वाले दुनिया भर के लोगों की प्रक्रिया है।

वैश्विक प्रणाली में, आर्थिक ड्राइव और आर्थिक अर्थव्यवस्था। दुनिया के संबंधों के अर्थ का वर्णन करने के लिए वैश्विक और व्यवस्थित प्रणाली के संदर्भ में चॉम्स्की को बनाए रखना। ऐसी स्थिति में, वैश्वीकरण का अर्थ है राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को दुनिया के बैंक में जाने के लिए। भारत के भारतीय राज्य में, यह भारत में विदेशी सेवाओं की अनुमति देकर विदेशी मुद्रा में अर्थव्यवस्था को खोलने के लिए दिखाई देगा। और हम सभी पोल्फस द्वारा जानते हैं। इसलिए दुनिया भर में व्यापार करने के लिए, ये कानून, सिद्धांत जो उन वैश्विक चरित्रों की तुलना करते हैं। इसलिए, दुनिया के मुंह को जल्दी से, आर्थिक और आर्थिक और दुनिया के कानूनों को साझा करना।

अर्थव्यवस्था के लिए एक उपाय के रूप में वैश्वीकरण के बारे में प्रभा जॉबिशियन सोच "। यदि

हम इन नौकरियों और मार्जिन को छोड़ देते हैं, जिसने हमारे धन, एक असाइनमेंट और सरकारी अधिकारियों और अधिकारियों को बनाया है, तो संपत्ति को निजीकरण कहा जाता है।

वैश्वीकरण और राजनीति -

अन्य देशों की तरह, लोग और संस्कृतियां दुनिया के शहर को बदल देती हैं, राजनीति, और प्रतिनिधियों को उन्हें दोहराने के लिए उन्हें दोहराना चाहिए। विभिन्न देशों का कई रूपों में अनुवाद किया जा सकता है। शांतिपूर्ण बातचीत, प्रलेखित, क्षेत्र में अनुभव, संस्कृति, संस्कृति और स्थिरता और सुसंगत और सुसंगत और सुसंगत और सुसंगत और सुसंगत और सुसंगत और सुसंगत और सुसंगत और सुसंगत। हालांकि, वैश्वीकरण और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों ने अच्छे और नकारात्मक बदल दिए हैं।

दुनिया में प्रौद्योगिकी में वृद्धि को जोड़ने के लिए और प्रमुख उत्पादों की बातचीत और प्रभावी बुद्धिमत्ता है। वैश्वीकरण दुनिया को विभिन्न राष्ट्रीयताओं और विभिन्न स्तरों, अर्थशास्त्र, राजनीतिक, सामाजिक, आदि में बातचीत से जोड़ता है। अंतर्राष्ट्रीय रिश्तों ने अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए दुनिया की योजना बनाई है। संस्कृति को समझने के लिए कला है। अंतर्राष्ट्रीय रिश्ते सामान्य देशों, लोगों और सहयोगियों पर निर्भर करते हैं और गहरे और अंतर्राष्ट्रीय संबंध, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को महसूस करते हैं। देश का कहना है कि भूमि, राजनीति और परंपरा का परिवर्तन, जल्द से जल्द, व्यवहार और सामाजिक संबंधों की प्रक्रिया, देश का कहना है। वैश्वीकरण ने राजनीतिक क्षेत्र में कई विकास का उत्पादन किया है। उनमें से कुछ इन तरह हैं !

लोकतांत्रिक समाज की घटना और आर्थिक विकास और आर्थिक विकास ने मानव समाज को बदल दिया है। किशोर वर्षों के अंत में, सार्वजनिक विज्ञान और विश्वविद्यालय, और एक राजनीतिक, राज्य और प्रदर्शन के रूप में अन्य प्रश्न। क्या लोकतंत्र के विषय के बारे में कोई सवाल है: वैश्वीकरण में किस तरह का प्रदर्शन शामिल है? किसकी सरकारें दुनिया के कारण लोकतंत्र या संस्कृति के रूप में व्यक्त की जाती हैं? यह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भागीदारी के आधार पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष या सहभागी लोकतंत्र को सीमित करता है। और अर्थव्यवस्था की समानता और सामंजस्य के अनुसार, औद्योगिक और कॉर्पोरेट लोकतंत्र के लिए उदार और सामाजिक लोकतंत्र और सामाजिक लोकतंत्र हैं "2 और विभिन्न भौगोलिक दायरे और कई धर्मों और जातीय समूहों के समूहों के अनुसार, अप्रत्यक्ष लोकतंत्र मौजूद है लोकतंत्र और बहुराष्ट्रीय और साहचर्य लोकतंत्र के अक्षम।"'3

लोकतंत्र की कुछ विशेषताएँ -

•नि: शुल्क चुनाव: इसका मतलब है कि प्रत्येक टीम में सत्ता तक पहुंच हो सकती है, यह कानून में स्वीकार करने के लिए एक प्रमुख रिकॉर्ड है। इस समूह की स्वतंत्रता, राजनेताओं, सामाजिक कार्यकर्ता 'जोसेफ सुमोरर' ने निर्णय लेने के लिए निर्णय लेने के लिए इस सूचकांक में देखा।

विभाजित और निगरानी। जिनके पास कोई अधिकार नहीं है, वे मेरे संकल्प का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक प्रतीक एक निर्णायक निर्णय होना चाहिए - बाहर पर प्रभाव के लिए कोई खतरा नहीं। अवसर और राजनीतिक और सार्वजनिक सभी नागरिकों के लिए एक होना चाहिए। राजनीतिक प्रणालियों और वैश्वीकरण और लोकतांत्रिक प्रणाली के संरचना के प्रदर्शन के बारे में कई अलग -अलग गुण हैं। एक जटिल, तरल और वैश्वीकरण और राजनीतिक नियम की स्थिति है। कुछ लोग कहते हैं कि वैश्वीकरण देश के सत्ता के स्तर में लोकतंत्र की डिग्री को पूछता है और समर्थन करता है। '6 और कुछ कहते हैं कि वैश्वीकरण लोकतांत्रिक प्रणाली के लिए एक चुनौती है। कुछ शोधकर्ताओं का मानना है कि प्रत्येक देश की स्थिति के आधार पर नकारात्मक भावनाएं और सही प्रभाव अलग -अलग होते हैं और इस देश की स्थिति पर निर्भर करते हैं।

वैश्विक और लोकतंत्र की उपलब्धि बहुत अधिक नहीं है। ऐसे कारण हैं जो सब कुछ के लिए एक बुकमार्क पुष्टि पर लागू होते हैं

- बोलने की स्वतंत्रता
- धार्मिक का विश्वास और धर्म
- स्थानीय लोग
- स्थानीय अधिकारियों के अधिकार
- राज्य की अत्यधिक स्थिति
- गवर्नर की अदालत
- प्रेस स्वतंत्रता, आदि।

हम कह सकते हैं कि एक ऐसा तरीका है जिससे हम गुणवत्ता और लोकतंत्र में प्रभावी हो सकते हैं।

- लोकतांत्रिक रूपों का विकास: मृत्यु, वैश्वीकरण की शक्ति के तहत, उनकी राय की तुलना में अधिक बदल गया है। हम कह सकते हैं कि उनके नए विचार, लोकतांत्रिक रूप न केवल जुड़ने की एक विधि, कानून, निचली स्वतंत्रता का कानून है, बल्कि लोकतंत्र की व्याख्या की जानी चाहिए। समाज में स्थानीय अनुशासन और विश्व परंपराओं का रखरखाव। 7
- मध्यम वर्ग की वृद्धि: शहरी समुदाय के वर्ग में वृद्धि और वैश्वीकरण, राष्ट्रीय आंदोलनों में सदस्य। बीच के मध्य, सफेद सफेद एक सामाजिक अभिव्यक्ति है। अन्यथा यह दिखाता है कि यह लोकतांत्रिक संगठन का विकास नहीं है।8

दुनिया भर में शहर के लिए क्या काम करता है, यह कहना है कि हर शहर का विकास यहां विकसित करना चाहता है, उसका नियंत्रण एक तरह से होना है। इसके लाभ के कई कारण आसान हैं- "राज्य का विचार, वर्ष के बाकी हिस्सों की शक्ति की शक्ति दुनिया भर में दुनिया भर की दुनिया से पुरानी है, जो छोटे से प्रतिस्थापित की गई है। राज्य काम करने के लिए एक छोटा सा कार्य है, जैसे कि अपने नागरिकों के कानूनी और संरक्षण का रखरखाव। "9

90के दशक तक सरकारें कल्याणकारी राज्य की नीतियों पर स्वयं अमल करती थीं। वैश्वीकरण ने राज्य के प्रत्येक क्रिया-कलाप में अपनी भागीदारी शुरू कर दी, जिससे सरकारों के फैसले पर इसका प्रभाव दिखने लगा। परिणामस्वरूप पर्यावरण, स्वास्थ्य जैसी नीतियों पर वैश्विक सम्मेलन होने लगे। आतंकवाद को भी वैश्विक संकट के तौर पर पेश किया, जिससे पूरा विश्व इन समस्याओं पर मिलकर विचार करता है। अपनी बातों को रखने के लिएवैश्वीकरण एक मिश्रित एवं स्वतंत्र मंच है "राज्य ने अपने को पहले के कई ऐसे लोक-कल्याणकारी कामों से खींच लिया है जिनका लक्ष्य आर्थिक और सामाजिक-कल्याण होता था। लोक कल्याणकारी राज्य की जगह अब बाजार आर्थिक और सामाजिक प्राथमिकताओं का प्रमुख निर्धारक है। पूरे विश्व में बहुराष्ट्रीय निगम अपने पैर पसार चुके हैं और उनकी भूमिका बढ़ी है। इससे सरकारों के अपने दम पर फैसला करने की क्षमता में कमी आती है। इसी के साथ एक बात और भी है। वैश्वीकरण से हमेशा राज्य की ताकत में कमी आती हो- ऐसी बात नहीं। राजनीतिक समुदाय के आधार के रूप में राज्य की प्रधानता को कोई चुनौती नहीं मिली है और राज्य इस अर्थ में आज भी प्रमुख है। विश्व की राजनीति में अब भी विभिन्न देशों के बीच मौजूद पुरानी ईष्या और प्रतिद्वंद्विता की दखल है। राज्य कानून और व्यवस्था, राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे अपने अनिवार्य कार्यों को पूरा कर रहे हैं।"[10] इसलिए अपनी उच्च प्रभाव शक्ति के साथ भूमंडलीकरण ने संस्कृति को भी पूरी तरह से प्रभावित किया है और राजनीति में व्यक्तिगत और राज्यों के दायरे तय किए हैं। भूमंडलीकरण ने नए राजनीतिक और सांस्कृतिक कलाकारों का निर्माण भी किया है। राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक स्कोप अब दुनिया में दिखाई दिए हैं। भूमंडलीकरण का मानव समाज पर सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसकी सरल कल्पना नहीं करनी चाहिए।

वैश्वीकरण और मीडिया

मीडिया ने हमें सनसनीखेज सुर्खियों का आदि बना दिया है। इतिहास, कला, संस्कृति, राजनीति, घटना आदि सभी क्षेत्रों में सनसनीखेज तत्व हावी हैं। सनसनीखेज सुर्खियाँ जनता के दिमाग पर निरंतर बमबारी कर रही हैं। इस हमले में ज्यादा-से-ज्यादा सूचनाएँ होती है, किन्तु इन सूचनाओं की व्याख्या करने और आत्मसात् करने की जरूरत में लगातार गिरावट आ रही हैं। आज मीडिया जनता को संप्रेषित की नहीं कर रहा, बल्कि भ्रमित भी कर रहा है। यह कार्य वह अप्रासंगिक बनाकर पुनरावृत्ति और शोर के साथ कर रहा है। बराबर मीडिया से 'क्लिचे' सुन रहे है। इस सबके कारण जहाँ मीडिया संप्रेषित कर रहा है। खास तौर पर टेलीविजन कम-से-कम सूचना संप्रेषित कर रहा है। स्मृति और घटना के इतिहास से इसका संबंध पूरी तरह टूट चुका है। यह ग्लोबल मीडिया का सामान्य फिनोमिना है। ग्लोबलाइजेशन को प्रभावी बनाने में परिवहन, संचार और साइबरस्पेस की आधुनिक तकनीकों की केन्द्रीय भूमिका रही है। इसके अलावा पर्यटन का तेजी से विकास हुआ है।

विदेशी चैनल्स : भूमंडलीकरण के दौर में जनसंचार माध्यमों का विकास दिन-ब-दिन सशक्त होता जा रहा है। आज हमारे देश में अधिक-से-अधिक चैनल दिखाने की होड़ लगी हुई है। केबल

सैंकड़ों की संख्या में चैनल प्रसारित कर रहा है जिसमें आधे से अधिक चैनल्स विदेशी चैनल्स है।

इंटरनेट : इंटरनेट सूचनाओं का मायाजाल है। घर बैठे कम्प्यूटर पर हम किसी भी तरह की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। सदियों पहले घटी घटना की खोज कर सकते हैं, वर्तमान की सभी सूचनाओं को प्राप्त कर सकते हैं, भविष्य-फल जान सकते हैं।

दैनिक समाचार पत्र : विश्व में दैनिक समाचार पत्रों की संख्या लाख के करीब पहुँच चुकी है। भूमंडलीकरण के कारण एक देश का समाचार-पत्र अपने देश के अलावा पड़ोसी देश तथा विश्व के दूसरे कोने तक पहुँच जाता है। रेल और हवाई जहाज के माध्यम से नहीं अपितु इन्टरनेट के माध्यम से ही समाचार-पत्र और पत्रिकाओं को विश्व के किसी भी कोने तक पहुंचना आज संभव हो गया है।

मीडिया और सामान्य जनमानस में जो अविश्वास की कड़ी पैदा हुई है, उससे यही प्रतीत होता है कि मीडिया ने अपनी भूमिका निभाना कम कर दिया है। मीडिया की छवि धुंधली होने पर सबसे ज्यादा असर वहाँ के जनमानस पर पड़ता है- ''आज स्वयं अमेरिका में सूचना क्रांति की मदद से जिस तरह भूमंडलीकरण पूँजीवाद और संस्कृति का विश्व भर में निर्यात किया जा रहा है, उसके प्रति नकारात्मक रूझान पनपने लगे हैं। एक प्रभावशाली तबका अमेरिका में लोकतंत्र के हास और धनिक तंत्र के हावी होने पर चिंता व्यक्त कर रहा है और इसे आर्थिक तानाशाही करार दे रहा है।''[11]

बहुराष्ट्रीय मीडिया कम्पनियाँ अपने कार्यक्रमों का निर्धारण विज्ञापन को ध्यान में रखकर करती हैं। विज्ञापन के जरिये ही ये बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने उत्पादों के लिए ग्राहक जुटा पाती हैं। विज्ञापन उद्योग एक तरह का कमाऊ पूत है, इन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए। घरेलू उत्पाद के दम तोड़ने का एक प्रमुख कारण यह विज्ञापन उद्योग भी हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान करने में मीडिया की भूमिका प्रमुख है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ विज्ञापन और मीडिया का सहारा लेकर ही शक्तिशाली बन रही है। संचार क्रांति के दौर में भी कुछ ही देशों की कम्पनियों का वर्चस्व बढ़ा है। इस तरह से देखें तो सूचनाओं का एक विशाल भण्डार तैयार होता नजर आ रहा है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ यहाँ भी अपना आधिपत्य बनाये रखना चाहती है, इसका ''अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उपग्रहों से जितनी भी जानकारियों का आदान-प्रदान होता है उसका 90 प्रतिशत हिस्सा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के खाते में जाता है। विश्व में 50 प्रतिशत सूचना और आंकड़ों का प्रवाह विभिन्न बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का होता है। सूचना उद्योग पर चंद महाशक्तियों ने अपना नियंत्रण कर लिया है।''[12]

आज मीडिया सूचना और मनोरंजन को समावेशी बनाकर इनका अपने हिसाब से प्रयोग कर रहा है। समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं के व्यापारीकरण ने पत्रकारिता के सिद्धांतों को धुंधला कर दिया है। आज मीडिया बाजार को ध्यान में रखकर अपना काम करती है। वैश्वीकरण ने मीडिया को तोड़ने-मरोड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी है- ''अनेक ऐसी घटनाएँ होती हैं जिनमें

किसी एक वर्ग की रूचि नहीं होती लेकिन मीडिया उन्हें ग्लैमराइज करके एक और खास तरह की कवरेज देकर रूचि पैदा करता है। आज मीडिया हर घटना में ग्लैमर की तलाश करता है। बलात्कार, हत्या, हिंसा और दुर्घटनाओं जैसी अंदर तक झकझोर देने वाली घटनाएँ भी वह ग्लैमर के साथ प्रस्तुत करता है। वास्तव में इनके पीछे व्यापारिक हित ही छिपे होते हैं।''[13]

भारत कभी गाँवों में बसता था, आज शहरीकरण का पर्याय बन उपभोक्तावादी समाज में परिवर्तित हो रहा है। अब गाँव नगर में और नगर महानगरों में परिवर्तित हो रहे हैं। जिनमें बड़ी-बड़ी बहुमंजिला इमारत, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, मल्टीप्लेक्स, मंहगी शराब, महंगी गाड़िया इत्यादि की वर्चस्वी उपस्थिति आज दृश्य की तरह देखने को मिलती है। किसान व मजदूर वर्ग पर अत्यधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। बड़े किसान तो कैसे न कैसे करके अपना जीवनयापन कर लेते हैं, परन्तु छोटे किसान, जो बड़े किसानों की जमीन पर खेती के कार्यों में मदद करते थे, अब वैश्वीकरण के कारण नष्ट ही हो रहे हैं, क्योंकि 'छोटे किसानों की जगह मशीनों ने ले ली है।

उपभोक्तावादी संस्कृति में सब कुछ भोग लेने की प्रवृत्ति ने स्त्री देह को भी नहीं छोड़ा है। समाज के आरम्भ से ही स्त्री को मात्र भोग्या माना गया है। मीडिया और विज्ञापनों ने स्त्री देह को सिर्फ उपभोग की वस्तु माना है। पैसे का लालच देकर, रोजगार के नाम पर स्त्रियों के साथ बलात्कार जैसे कुकर्म दिनों-दिन बढ़ते जा रहे है। निःसंदेह वह दिन दूर नहीं, जब यह समाज एक दिन अंधी खाई में गिरेगा। जहाँ विश्व में एक ओर अरबपतियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है, वहीं दूसरी और भूखे और बेरोजगार लोगों की संख्या भी बहुत बड़ी तेजी से बढ़ी है। वैश्वीकरण के इस दौर में सब कुछ तेजी से बदल रहा है। सब कुछ फास्ट हो रहा है। फास्ट फूड, फास्ट म्यूजिक, फास्ट पैकिंग आदि। छुआछूत जैसे समाज में हाशिए के वर्ग को उठने नहीं दिया जा रहा, माना कि क़ानूनी रूप में इस समस्या पर निगरानी है, परन्तु शोषण आज भी खत्म नहीं हुआ है, बल्कि कहा तो ये जा सकता है कि हरेक तरह के सामाजिक और आर्थिक शोषण में इस वैश्वीकरण के दौर में वृद्धि ही हुई है।

सन्दर्भ ग्रंथ:

[1].रजनी, इण्टरनेशनल जनरल ऑफ रिसर्च इन हिंदी (ई-पत्रिका), खण्ड-3, अंक-2, 2021, पृ. 62

[2].सुभाष, धूलिया, सूचना क्रांति की राजनीति और विचारधारा, शिल्पी प्रकाशन, 2001, पृ. 30

[3].1रजनी, इण्टरनेशनल जनरल ऑफ रिसर्च इन हिंदी (ई-पत्रिका), खण्ड-3, अंक-2, 2021, पृ. 61

[4].समकालीन विश्व राजनीति (अध्याय-9 वैश्वीकरण), एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 2021-22, पृ. 139

[5].वही, पृ. 139